

डॉ. गैरी येट्स, यिर्मयाह, व्याख्यान 29, यिर्मयाह 46-49, राष्ट्रों के विरुद्ध भविष्यवाणी

© 2024 गैरी येट्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी येट्स यिर्मयाह की पुस्तक पर अपनी शिक्षा देते हुए हैं। यह सत्र 29, यिर्मयाह 46-49, राष्ट्रों के विरुद्ध भविष्यवाणियाँ है।

यिर्मयाह की पुस्तक पर हमारे अंतिम दो सत्रों में, हम पुस्तक के तीसरे प्रमुख भाग अध्याय 46 से 51 को देखेंगे, जिसमें राष्ट्रों के विरुद्ध यिर्मयाह की भविष्यवाणियों के बारे में बताया गया है।

याद रखें कि यिर्मयाह की पुस्तक तीन प्रमुख खंडों में विभाजित है। अध्याय 1 से 25 में, हमारे पास यिर्मयाह के यहूदा और यरूशलेम के विरुद्ध न्याय के संदेश हैं, आने वाले निर्वासन की चेतावनियाँ हैं, और यदि लोग पश्चाताप नहीं करते हैं या अपने तरीके नहीं बदलते हैं तो परमेश्वर उनके विरुद्ध विनाश लाने जा रहा है। अध्याय 26 से 45 में, हमारे पास न्याय के उस संदेश के साथ-साथ यहूदा द्वारा भविष्यवाणी के शब्दों को अस्वीकार करने की कहानियाँ और विवरण हैं, जो इस बात पर केंद्रित है कि यहूदा राष्ट्र के भीतर कितने अलग-अलग व्यक्तियों ने प्रभु के वचन को अस्वीकार कर दिया है, उत्पीड़न और विरोध जिसका यिर्मयाह ने सामना किया और अनुभव किया जब उसने वचन का प्रचार किया।

हमारे पास अध्याय 30 से 33 में इज़राइल की बहाली और लोगों को भूमि पर वापस लाने की भगवान की भविष्य की योजनाओं के बारे में वादा अनुभाग भी है। यिर्मयाह की पुस्तक का तीसरा और अंतिम खंड वे दैवज्ञ हैं जो यिर्मयाह ने इस्राएल को घेरने वाले राष्ट्रों के विरुद्ध भविष्यवाणी की है। याद रखें कि उसके आदेश में, यिर्मयाह को राष्ट्रों के लिए भविष्यवक्ता बनने के लिए बुलाया गया है।

वह भूमिका निश्चित रूप से यिर्मयाह अध्याय 46 से 51 में प्राथमिक फोकस है। याद रखें, हमारे पास यिर्मयाह की पुस्तक के दो अलग-अलग संस्करण हैं। हमारे पास वह संस्करण है जो पुराने नियम के ग्रीक अनुवाद सेप्टुआजेंट में परिलक्षित होता है।

हमारे पास हिब्रू परंपरा भी है जो एमटी में परिलक्षित होती है। सेप्टुआजेंट संस्करण में, जो यिर्मयाह की पुस्तक के पुराने रूप का प्रतिनिधित्व कर सकता है, राष्ट्रों के विरुद्ध ये भविष्यवाणियाँ अध्याय 25, श्लोक 12 के बाद आती हैं। इसलिए, वे पुस्तक के मध्य में हैं।

मसोरेटिक परंपरा में, वे अंत में आते हैं। मुझे लगता है कि अंत में इन भविष्यवाणियों के स्थान के बारे में हम जो एक बात देखते हैं, वह यह है कि यह यिर्मयाह द्वारा बताई गई मूल कालक्रम को अधिक दर्शाता है। सबसे पहले, परमेश्वर अपने लोगों के विरुद्ध अपना न्याय करने जा रहा है, और फिर परमेश्वर राष्ट्रों के विरुद्ध अपना न्याय करेगा।

जब आप अध्याय 46 से 51 पढ़ते हैं, तो आपको यिर्मयाह 25 में खंड एक के अंत को भी ध्यान में रखना चाहिए, जहाँ यिर्मयाह परमेश्वर के क्रोध और परमेश्वर के क्रोध के प्याले के बारे में बात करता है। पृथ्वी के सभी राष्ट्र परमेश्वर के क्रोध के प्याले को पीने जा रहे हैं। वे इसकी मादक शक्ति के कारण लड़खड़ाएँगे, और यहूदा उन राष्ट्रों में शामिल है।

लेकिन उस क्रम का एक हिस्सा यह भी है कि परमेश्वर द्वारा राष्ट्रों का न्याय करने के बाद, परमेश्वर द्वारा अपने लोगों, यहूदा के विरुद्ध न्याय करने के बाद, अंतिम न्याय और चरमोत्कर्ष न्याय बेबीलोन पर पड़ने वाला है। मसोरेटिक परंपरा जिसमें पुस्तक के अंत में ये भविष्यवाणियाँ हैं, वह भी इसे दर्शाती है क्योंकि, अंततः, इस पुस्तक का निष्कर्ष अध्याय 50 और 51 में बेबीलोन के विरुद्ध न्याय है, साथ ही परिशिष्ट हमें यरूशलेम के पतन की कहानी का एक और विवरण देता है। आपको याद होगा कि जैसा कि हमने इस पुस्तक के माध्यम से काम किया है, हमने यह भी देखा है कि यिर्मयाह, कई मायनों में, इस बारे में कुछ बहुत ही चौंकाने वाली बातें कहता है कि बेबीलोन परमेश्वर के न्याय को पूरा करने और यिर्मयाह द्वारा प्रचारित न्याय के इस संदेश के संबंध में परमेश्वर की योजनाओं को क्रियान्वित करने में क्या भूमिका निभाने जा रहा है।

कुछ मायनों में, यिर्मयाह ने बेबीलोन के बारे में जो कहा वह न केवल चौंकाने वाला है, बल्कि विध्वंसक भी लगता है। उस पर उसके अपने लोगों ने देशद्रोही होने या बेबीलोन के खिलाफ युद्ध के प्रयासों और प्रतिरोध को कमजोर करने का आरोप लगाया था। जब हम देखते हैं कि यिर्मयाह बेबीलोन के बारे में क्या कह रहा था, तो हम समझ जाते हैं कि यह सच क्यों है।

यिर्मयाह कह रहा था कि परमेश्वर ने यहूदा के लोगों पर न्याय करने के लिए नबूकदनेस्सर को अपना सेवक नियुक्त किया था। 50 और 51 में वर्णित भविष्यवाणियों में से एक तरीका यह है कि बेबीलोन पूरी धरती का हथौड़ा है। नबूकदनेस्सर परमेश्वर का सेवक है।

भगवान ने बेबीलोन के राष्ट्रों पर प्रभुत्व दिया है। बेबीलोन में रहने वाले यहूदियों से कहा गया है कि वे बेबीलोन की शांति के लिए उसी तरह प्रार्थना करें जैसे कि अतीत में उन्होंने यरूशलेम की शांति के लिए प्रार्थना की थी। नबूकदनेस्सर ने भगवान द्वारा नियुक्त और अभिषिक्त उप-शासक के रूप में दाऊद का स्थान ले लिया है।

यिर्मयाह ने बेबीलोनियों की भूमिका के बारे में ये विध्वंसकारी बातें कही हैं। भगवान वास्तव में बेबीलोनियों के साथ युद्ध करके अपने ही लोगों के खिलाफ पवित्र युद्ध लड़ रहे हैं। लेकिन याद रखें, यिर्मयाह ये बातें इसलिए नहीं कह रहा है क्योंकि वह सिर्फ बेबीलोनियों का समर्थक है।

यिर्मयाह ये बातें इसलिए नहीं कह रहा है क्योंकि वह देशद्रोही है। यिर्मयाह लोगों को यह समझाने की कोशिश कर रहा है कि वे किस दौर से गुज़र रहे हैं और उन्हें यह एहसास दिला रहा है कि जिन मुद्दों से उन्हें निपटना पड़ रहा है, वे राजनीतिक नहीं हैं। वे कोई सैन्य समस्या नहीं हैं, जिसका समाधान किया जाना चाहिए।

यह अंततः एक आध्यात्मिक मुद्दा है। यहूदा की मुख्य समस्या यह नहीं है कि उन्हें बेबीलोनियों से निपटना पड़ रहा है। यहूदा की मुख्य समस्या यह है कि परमेश्वर के साथ उनके रिश्ते में कुछ गड़बड़ है।

यदि वे अपने पापपूर्ण तरीकों से नहीं मुड़ते हैं, तो परमेश्वर बेबीलोन को न्याय के साधन के रूप में इस्तेमाल करने जा रहा है। लेकिन पुस्तक के अंत में, जब हम अध्याय 46 से 51 तक पहुँचते हैं, तो परमेश्वर के लोगों के न्याय पर ध्यान केंद्रित करना इस्राएल और यहूदा के चारों ओर रहने वाले इन राष्ट्रों के न्याय पर ध्यान केंद्रित करने में बदल जाता है। जब हम यिर्मयाह को देखते हैं, तो हम अन्य भविष्यवाणी पुस्तकों के प्रकाश में जो बातें देखते हैं, उनमें से एक यह है कि राष्ट्रों के विरुद्ध ये भविष्यवाणियाँ पुराने नियम की भविष्यवाणी परंपरा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

सभी प्रमुख भविष्यवक्ताओं के पास भविष्यवाणियों के ऐसे खंड हैं जहाँ भविष्यवक्ता राष्ट्रों के विरुद्ध परमेश्वर के न्याय के बारे में बात कर रहे हैं। यशायाह की पुस्तक में, हमारे पास अध्याय 13 से 23 में इस प्रकार की भविष्यवाणियाँ हैं। यहजकेल की पुस्तक में, हमारे पास पुस्तक के मध्य में 25 से 32 में राष्ट्रों के विरुद्ध भविष्यवाणियाँ हैं जो विस्तारित खंड से ठीक पहले आती हैं जहाँ यहजकेल इस्राएल की पुनर्स्थापना का वर्णन करने जा रहा है।

यहां यिर्मयाह में, वे पुस्तक के हिब्रू संस्करण में अध्याय 46 से 51 में हैं। छोटे भविष्यवक्ताओं में, हमारे पास आमोस की पुस्तक के शुरुआती दो अध्यायों में राष्ट्रों के विरुद्ध भविष्यवाणियाँ हैं। अदायाह की पुस्तक, संपूर्ण भविष्यवाणी पुस्तक एदोम के लोगों के विरुद्ध एक निर्णय भाषण है।

यह एक भविष्यवाणी पुस्तक है जो एक बहुत ही संक्षिप्त, संक्षिप्त संदेश है, जो कई मायनों में, यिर्मयाह अध्याय 49 में एदोम के खिलाफ दिए गए संदेश के समानांतर है। साहित्यिक और सामान्य स्रोतों और चीजों के मुद्दे उस चर्चा में आते हैं। एक और छोटा पैगंबर जो एक विदेशी राष्ट्र के खिलाफ एक दैवज्ञ है, वह नहूम की पुस्तक है, जहां भगवान नीनवे और असीरियन साम्राज्य के लोगों पर उनके द्वारा की गई सभी क्रूरता और हिंसा के लिए अपने फैसले की घोषणा करते हैं।

इसलिए, राष्ट्रों के विरुद्ध भविष्यवाणियाँ सिर्फ यिर्मयाह की पुस्तक का हिस्सा नहीं हैं। वे सामान्य रूप से पुराने नियम की भविष्यवाणी परंपरा का हिस्सा हैं। अब, यह यिर्मयाह के मिशन का हिस्सा है क्योंकि उसे परमेश्वर ने राष्ट्रों के लिए भविष्यवक्ता के रूप में नियुक्त किया है।

लेकिन इसका मतलब यह नहीं है, और राष्ट्रों के खिलाफ इन भविष्यवाणियों का मतलब यह नहीं है कि पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने सड़क यात्राएँ कीं और वे बाहर गए और, मैं बेबीलोन में कुछ अतिथि भूमिकाएँ निभाने जा रहा हूँ, और यहाँ मैं इन लोगों को बताने जा रहा हूँ। अधिकांश भाग के लिए, ये संदेश स्वयं इज़राइल के लोगों को निर्देशित किए गए प्रतीत होते हैं। वे इन अन्य विदेशी राष्ट्रों के बारे में संदेश हैं, लेकिन दुर्लभ घटनाओं को छोड़कर, मुझे नहीं लगता कि भविष्यवक्ता आम तौर पर इन स्थानों पर गए और इन संदेशों को दिया।

अगर उन्होंने ऐसा किया, तो शायद उन्हें तुरंत शहर छोड़ना पड़ा। अब, इसका एक अपवाद योना है, जिसे वास्तव में भगवान ने निनवे जाने और वहाँ प्रचार करने के लिए नियुक्त किया है। मुझे लगता है कि योना का इस बात से विरोध आंशिक रूप से इस कारण है कि यह आमतौर पर काम करने का तरीका नहीं है।

यहां तक कि जब कोई भविष्यवक्ता विदेशी देशों के बारे में प्रचार कर रहा होता है, तो आप आमतौर पर वहां नहीं जाते। योना की आपत्ति सिर्फ इस बात पर नहीं है कि उसे उनके खिलाफ न्याय का प्रचार करना होगा, और वे नाराज़ हो सकते हैं और उन्हें यह पसंद नहीं आएगा। यह असली कारण नहीं है।

उसे डर है कि अगर वह वहाँ जाकर नीनवे के लोगों को उपदेश देगा, तो वे संदेश को गंभीरता से ले सकते हैं और न्याय से बच सकते हैं। इस तथ्य के कारण कि अशूर इस्राएल और योना के लोगों के दुश्मन हैं, वह ऐसा नहीं चाहता है। यिर्मयाह अध्याय 51, श्लोक 59 और 60 में हमें बताया गया है कि जब यिर्मयाह बेबीलोन के खिलाफ इन भविष्यवाणियों की रचना करता है, तो वह सारैया नाम के एक व्यक्ति को भेजता है, जो उसके लेखक बारूक का भाई लगता है।

वह सारैया को नियुक्त करता है, और जब सारैया 593 ईसा पूर्व में बेबीलोन जाता है और सिदकियाह के साथ वहाँ जाता है, तो वह उसे बेबीलोन के विरुद्ध यिर्मयाह की भविष्यवाणियों की पुस्तक पढ़ने, फिर उनके चारों ओर एक चट्टान बाँधने और उन्हें फरात नदी में फेंकने का आदेश देता है। लेकिन जब वह उन्हें पढ़ रहा था, तो क्या उसने वास्तव में लोगों को उनका उपदेश दिया था, यह स्पष्ट नहीं है। लेकिन राष्ट्रों के विरुद्ध इन भविष्यवाणियों का उद्देश्य मुख्य रूप से इस्राएल से बात करना और परमेश्वर के लोगों को महत्वपूर्ण दृष्टिकोण सिखाना था, जिन्हें उन्हें उन सभी चीजों को ध्यान में रखने की आवश्यकता थी जो शास्त्रीय भविष्यवक्ताओं के समय में यहूदा और इस्राएल के राष्ट्रों के साथ बातचीत के साथ चल रही थीं।

ठीक है। यहाँ कुछ मुख्य विषय और कारण दिए गए हैं कि क्यों परमेश्वर ने अपने भविष्यवक्ताओं को विदेशी राष्ट्रों के विरुद्ध ये संदेश देने के लिए कहा। पहला, यह इस्राएल के लिए एक चेतावनी थी।

यह इजराइल के लोगों के लिए इन अन्य देशों पर ईश्वर की संप्रभुता का एक प्रदर्शन था। भगवान सिर्फ एक राष्ट्रवादी देवता नहीं हैं जिनका अपने गृह क्षेत्र में प्रभाव है। इन अन्य प्राचीन निकट पूर्वी लोगों के कुछ देवताओं को अक्सर इसी तरह देखा जाता था, कि उनके पास एक विशिष्ट क्षेत्रीय क्षेत्र था।

भगवान ऐसा नहीं है। वह कोई राष्ट्रवादी देवता नहीं हैं। उन्हें सिर्फ इसराइल के लोगों में दिलचस्पी नहीं है।

इजराइल के लोगों के साथ उनका खास रिश्ता है। वे उसकी विरासत हैं, लेकिन वास्तव में वह पूरी दुनिया का राजा है। और ये सभी राष्ट्र परमेश्वर को उत्तर देते हैं।

अध्याय में, और मुझे लगता है कि हम राष्ट्रों के खिलाफ इन भविष्यवाणियों के भीतर कई अंश देखते हैं जो दर्शाते हैं कि अध्याय 46, श्लोक 18 और 19 में प्रभु मिस्र से कहने जा रहे हैं, हे मिस्र के निवासियों, निर्वासन के लिए अपना सामान तैयार करो। क्योंकि मेम्फिस एक उजाड़, एक ऐसा खंडहर बन जाएगा जिसमें कोई भी नहीं रहेगा। खैर, भगवान उनके खिलाफ इस तरह का संदेश इसलिए दे सकते हैं क्योंकि इससे ठीक पहले श्लोक में, यह कहा गया है, राजा जिसका नाम सेनाओं का यहोवा है, उसकी घोषणा मेरे जीवन की शपथ है।

ठीक है। परमेश्वर यह घोषणा क्यों कर सकता है कि मिस्र निर्वासन में जा रहा है, उसी तरह जैसे वह यह घोषणा कर सकता था कि यहूदा निर्वासन में जा रहा है? क्योंकि परमेश्वर राजा है जो वहाँ जो कुछ भी होता है उसे उतना ही नियंत्रित करता है जितना वह अपने लोगों को नियंत्रित करता है। प्रभु, प्रभु, सेनाओं का प्रभु है, सेनाओं का प्रभु जो अपनी इच्छा को पूरा करता है और अपनी संप्रभुता को आगे बढ़ाता है।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह यहूदा में है या मिस्र में। याद रखें कि शरणार्थियों के मिस्र भागने और यिर्मयाह को अपने साथ ले जाने का एक कारण यह है कि वे सोचते हैं कि यह उन्हें बेबीलोन के दायरे से बाहर ले जाएगा या भगवान द्वारा उनके खिलाफ फैसला लाने की संभावना से बाहर हो जाएगा। यिर्मयाह कहने जा रहा है, मिस्र जाने से तुम परमेश्वर के क्षेत्र से दूर नहीं हो जाओगे।

वह हर जगह संप्रभु है। संभवतः सबसे दूर की भूमि जिसका उल्लेख यिर्मयाह 46 से 51 में इन भविष्यवाणियों में किया गया है, एलामाइट हैं। और एलाम एक राज्य है जो वास्तव में बेबीलोन के पूर्व में है।

और हम वास्तव में उन्हें इन अन्य दैवज्ञों में राष्ट्रों के विरुद्ध केंद्रित या उजागर होते नहीं देखते हैं। परन्तु यहोवा यह बात एलाम के विषय में कहता है, जो मेसोपोटामिया से सैकड़ों मील पूर्व में है, जो इस्राएल और यहूदा देश से 500 मील दूर है। और यहोवा यिर्मयाह अध्याय 49, पद 38 में कहता है, मैं उनके पीछे तब तक तलवार भेजूंगा जब तक मैं उन्हें नष्ट न कर डालूं।

और मैं एलाम में अपना सिंहासन स्थापित करूंगा, और उनके राजा और हाकिमों को नाश करूंगा, यहोवा की यही वाणी है। तो फिर परमेश्वर की संप्रभुता कहाँ तक फैली हुई है? इस समय राष्ट्रों की सबसे दूर तक पहुंच की कल्पना करें। मैं अपना सिंहासन सबसे दूर स्थापित करूंगा।

भगवान राजा है। अध्याय 46, श्लोक 9 और 10 में प्रभु मिस्र से फिर कहते हैं, हे घोड़ों, आगे बढ़ो, और हे रथों, क्रोध करो। कूश और पूत के योद्धा, जो ढाल संभालते थे, और लूट के लोग जो धनुष चलाने में कुशल थे, वे निकल जाएं, कि सेनाओं के परमेश्वर यहोवा का यही दिन है।

तो, उसी तरह, कि परमेश्वर अपने ही लोगों के खिलाफ एक पवित्र युद्ध लड़ सकता है, उसी तरह, कि वह यहूदा के खिलाफ लड़ने के लिए सेनाओं को नियुक्त कर सकता है, यहोवा ही वह राजा है जो इन अन्य राष्ट्रों पर भी शासन करता है। और मैंने यह कहा, मुझे लगता है कि जब हमने यिर्मयाह की पुस्तक का अध्ययन शुरू किया, तो मेरा मानना था कि सबसे व्यावहारिक चीजों में से एक जिसे हम भविष्यवक्ताओं को पढ़ने से सीख सकते हैं और याद दिलाने वाली सबसे उत्साहजनक चीजों में से एक यह तथ्य है कि किसी भी राजनीतिक स्थिति पर प्रभु का नियंत्रण है। यहोवा राजाओं के हृदयों को द्रवित करता है।

वह उन्हें पानी की तरह अपनी इच्छा और अपनी आज्ञा मानने के लिए निर्देशित करता है। और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि दुनिया में चीजें कितनी अराजक हैं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता

कि यिर्मयाह के दिनों में चीजें कितनी अराजक थीं, परमेश्वर पूरी तरह से संप्रभु है, न केवल इस्राएल पर, बल्कि राष्ट्रों पर भी। ठीक है।

दूसरी बात जो मुझे लगता है कि राष्ट्रों के खिलाफ़ ये भविष्यवाणियाँ इस्राएल के लोगों के लिए प्रोत्साहन का एक शब्द हैं, कि अंततः परमेश्वर उनके शत्रुओं से निपटेगा, और परमेश्वर अंततः इस्राएल को उनके बंधन, उनके निर्वासन और उनकी सैन्य हार से भी मुक्त करेगा। जिन राष्ट्रों ने इस्राएल पर अत्याचार किया था, अंततः, स्थिति उलट जाएगी, और परमेश्वर इन राष्ट्रों पर भी न्याय लाएगा। इसलिए एक इस्राएली के रूप में, जब मैं पलिशियों और बेबीलोनियों और मिस्रियों और मोआबियों और उन सभी के खिलाफ़ ये भविष्यवाणियाँ सुन रहा हूँ, तो मैं न केवल अन्य लोगों के बारे में परमेश्वर के न्याय के बारे में सुन रहा हूँ, बल्कि मुझे यह भी याद दिलाया जा रहा है कि कैसे परमेश्वर अंततः अपने लोगों को बचाने के लिए हस्तक्षेप करने जा रहा है।

यिर्मयाह अध्याय 46, श्लोक 27 और 28, फिर से मिस्र की ओर निर्देशित इस भविष्यवाणी में, प्रभु कहते हैं, हे मेरे सेवक याकूब, मत डर। इसलिए, हमारे पास इस्राएल के लोगों को उद्धार की भविष्यवाणी दी जा रही है। हे इस्राएल, घबरा मत, क्योंकि मैं तुझे दूर से और तेरे वंश को उनकी बंधुआई के देश से छुड़ाऊंगा।

याकूब लौटकर चैन और चैन से रहेगा, और कोई उसको डरानेवाला न होगा। और फिर यह कहता है, हे मेरे दास याकूब, मत डर, यहोवा की यह वाणी है, क्योंकि मैं तेरे संग हूँ। मैं जातियों का अन्त कर दूंगा।

तो फिर परमेश्वर इन राष्ट्रों के विरुद्ध न्याय क्यों ला रहा है? सिर्फ़ इसलिए नहीं कि वह विदेशियों से नफरत करता है, बल्कि अंततः यह उसके अपने लोगों का उद्धार करने के लिए है। जकर्याह अध्याय दो, श्लोक आठ, भविष्यवक्ता कहता है, जो कोई इस्राएल को छूता है वह परमेश्वर की आंख के तारे को छूता है। और इसलिए, बेबीलोन और इनमें से कई अन्य राष्ट्रों ने इस्राएल के लोगों या यहूदा के लोगों पर अत्याचार किया था, ऐसा करके उन्होंने एक तरह से भगवान की आंख में अपनी उंगली डाली थी।

जब आप ऐसा करेंगे तो भगवान जवाब देंगे। भगवान प्रतिक्रिया देने जा रहे हैं और भगवान अंततः अपने लोगों को बचाने और बचाने और उद्धार करने जा रहे हैं। तो, इज़राइल के लोगों के लिए मुक्ति का एक संदेश है जो 46 से 51 में इन भविष्यवाणियों से निकलता है।

तीसरी बात, और फिर, यह इज़राइल के लोगों के लिए एक विशिष्ट संदेश था। इन विदेशी राष्ट्रों के विरुद्ध ये भविष्यवाणियाँ अंततः इज़राइल या इज़राइल और यहूदा के राजनीतिक नेताओं को चेतावनी देती हैं कि इन अन्य देशों के साथ गठबंधन उन्हें किसी भी संकट से नहीं बचा पाएगा, जिससे वे गुज़र रहे हैं। आपको याद होगा कि सिदकिय्याह, एक राष्ट्र के रूप में यहूदा के अंतिम दिनों में, उम्मीद कर रहा था कि मिस्र के साथ गठबंधन से उसे किसी तरह समय मिलेगा या बेबीलोन के संकट से मुक्ति मिलेगी।

यिर्मयाह ने तर्क दिया और उसे याद दिलाया, देखो, इससे तुम्हें मदद नहीं मिलेगी। वह तुम्हें बचाने वाला नहीं है। भले ही आप स्वयं बेबीलोन की सेना को हरा सकें और बचे हुए सभी घायल लोग हों, तो भी वे वापस आएंगे और आपको हरा देंगे।

भविष्यवक्ता यशायाह ने हिजकिय्याह को चेतावनी दी थी, उन लोगों पर हाथ जो मिस्र पर भरोसा करते हैं और जो मिस्र जाते हैं क्योंकि हिजकिय्याह के सलाहकार उसे ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे। आइए गठबंधन बनाएं। आइए गठबंधन बनाएं।

शायद अगर हम सही व्यवस्था या सही राजनीतिक गठबंधन के साथ आगे आए, तो हम इससे बच सकते हैं। फिर से, उनके वादे या उनकी समस्याएं राजनीतिक नहीं थीं। उनकी समस्याएं सैन्य नहीं थीं।

उनकी समस्याएँ आध्यात्मिक थीं। उन्हें भगवान से परेशानी थी। इसलिए, ये गठबंधन उन्हें बचाने वाले नहीं हैं।

यिर्मयाह अध्याय 49 में एदोम को दिए गए संदेश में इस विचार का एक दिलचस्प प्रतिबिंब हमें मिलता है। एदोम यहूदा के ठीक बगल के पड़ोसी देशों में से एक है। वे एसाव के वंशज हैं।

इसलिए, उनका इस लोगों के साथ बहुत करीबी रिश्ता है। लेकिन अध्याय 49, श्लोक 14 और 16 में, यहाँ लिखा है, मैंने प्रभु से एक संदेश सुना है, और राष्ट्रों के बीच एक दूत भेजा गया है। इसके बारे में क्या खास है? खैर, अगर आप यिर्मयाह अध्याय 27, श्लोक तीन पर वापस जाते हैं, तो हम 594-593 ईसा पूर्व में यरूशलेम में हुए एक सम्मेलन के बारे में पढ़ते हैं जिसमें फिर से कई राष्ट्रों के दूत सिदकिय्याह से मिलने आए थे।

यहाँ जिस एदोम का उल्लेख किया गया है, वह उन लोगों में से एक था, जिन्होंने यरूशलेम में दूत भेजे थे। उन्होंने वहाँ दूत इसलिए भेजे थे, क्योंकि वे अपनी सैन्य रणनीति की योजना बनाने के लिए हिजकिय्याह से मिल रहे थे। हम बेबीलोनियों का सामना कैसे कर सकते हैं, उनका विरोध कैसे कर सकते हैं? खैर, परमेश्वर ने इसका जवाब यह दिया कि उसने राष्ट्रों के पास अपने दूत भेजे।

और वे यों कहते हैं, इकट्ठे होकर उसके विरुद्ध आओ, और युद्ध के लिये उठो। क्योंकि देखो, मैं तुम्हें राष्ट्रों के बीच छोटा और मनुष्यों के बीच तुच्छ बनाऊंगा। जिस भयावहता से आप प्रेरित होते हैं, उसने आपको और आपके दिल के गौरव को धोखा दिया है।

तू जो चट्टान की दरारों में रहता है, तू जो पहाड़ी की ऊंचाई को थामे रहता है। ठीक है, वे बेबीलोनियों का विरोध करने की योजना बनाने के लिए यरूशलेम में दूत भेज रहे थे। और सिदकिय्याह शक्तिशाली है।

अरे, वाह, एडोमाइट्स, शायद वे मेरी मदद कर सकते हैं। खैर, परमेश्वर ने एक दूत भेजा है जो कहता है कि एदोमी लोग पराजित होने वाले हैं। ऐसे लोगों के साथ गठबंधन बनाने का कोई मतलब नहीं है जो स्वयं ईश्वर के न्याय के अधीन खड़े हैं।

यही कारण है कि अध्याय 46 में शुरुआती अध्याय एक संदेश से संबंधित है जो मिस्र के खिलाफ निर्देशित है, फिर से, मिस्र वह प्राथमिक राष्ट्र था जिसकी सिदकियाह बेबीलोन की सेना के साथ मदद करने में सक्षम होने की उम्मीद कर रहा था। खैर, वे उसकी मदद नहीं कर सकते क्योंकि वे भी भगवान के न्याय के अधीन हैं। और यहोवा यहूदा के विरुद्ध पवित्र युद्ध लड़ने के लिये नबूकदनेस्सर को भेज रहा है।

अध्याय 46 में संदेश यह है कि ईश्वर मिस्र पर भी पवित्र युद्ध करने के लिए बेबीलोन के विरुद्ध दूत या बेबीलोनियों को भेजने जा रहा है। तो, यहाँ उद्देश्य आंशिक रूप से, यहूदा के नेताओं को चेतावनी देना है, राजाओं को चेतावनी देना है, कि इन अन्य देशों के साथ सैन्य गठबंधन काम नहीं करेगा। ठीक है।

राष्ट्रों के विरुद्ध दैवज्ञों का अंतिम प्रमुख उद्देश्य विशेष रूप से इन राष्ट्रों को भगवान की वाचा के उल्लंघन के लिए दोषी ठहराना है। ठीक है। इजराइल निंदा के घेरे में खड़ा है।

वे परमेश्वर के अभियोग के अधीन हैं क्योंकि उन्होंने मूसा की वाचा का उल्लंघन किया है। उन्होंने उस व्यवस्था की शर्तों को तोड़ा है जो परमेश्वर ने इस्राएल और यहूदा के साथ अपने चुने हुए लोगों के रूप में बनाई थी। लेकिन जब परमेश्वर पृथ्वी के राष्ट्रों पर अभियोग लगाता है, तो याद रखें, वे मूसा की वाचा के अधीन नहीं हैं।

परमेश्वर व्यवस्था की 10 आज्ञाओं या 613 आज्ञाओं को निकालकर राष्ट्रों के लोगों को यह नहीं बताएगा कि परमेश्वर उनका न्याय क्यों कर रहा है। ऐसा लगता है कि परमेश्वर राष्ट्रों का न्याय कर रहा है, क्योंकि उन्होंने नूह की वाचा का उल्लंघन किया है जो उद्धार के इतिहास के समय से पहले की बात है। नूह की वाचा सिर्फ एक व्यवस्था नहीं थी जिसे परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों के साथ बनाया था।

नूह की वाचा एक ऐसी वाचा थी जिसे परमेश्वर ने सभी राष्ट्रों के साथ स्थापित किया था। डरावनी बात, और एक ऐसी बात जिस पर हम विचार करेंगे, वह यह है कि यदि बाइबल इसे एक शाश्वत वाचा के रूप में वर्णित करती है, और यदि परमेश्वर ने पृथ्वी के उन राष्ट्रों का न्याय किया जो यिर्मयाह और यशायाह के समय में दुनिया में थे, यदि परमेश्वर ने उन राष्ट्रों को नूह की वाचा के उल्लंघन के लिए उत्तरदायी ठहराया, और यदि यह वास्तव में एक शाश्वत वाचा है, तो आज के राष्ट्र भी उन शर्तों के लिए उत्तरदायी हैं जिन्हें परमेश्वर ने उस व्यवस्था में निर्धारित किया था। आपको याद होगा कि उत्पत्ति 9, 5, और 6 में नूह की वाचा में मानवता पर जो प्राथमिक जिम्मेदारी रखी गई है, वह यह है कि रक्तपात और हिंसा पर रोक लगाई गई है।

नूहिक वाचा कहती है कि ईश्वर एक नई व्यवस्था स्थापित कर रहा है कि जो कोई मनुष्य का खून बहाएगा, उसका खून मनुष्य द्वारा बहाया जाएगा। परमेश्वर पृथ्वी के राष्ट्रों को उनकी हिंसा और उनके रक्तपात के लिए जिम्मेदार ठहरा रहा है। जब ईश्वर पृथ्वी के न्याय का चित्रण करता है, जब भविष्यवक्ता यशायाह यशायाह की पुस्तक के अध्याय 24, छंद 1 से 5 में इसके बारे में बात करता है, तो वह कहता है कि पूरी दुनिया ईश्वर के न्याय के अधीन झूल रही है और लड़खड़ा रही है।

खैर, भगवान यह फैसला क्यों ला रहे हैं? क्योंकि उन्होंने सनातन वाचा का उल्लंघन किया है। फिर, यह मोज़ेक कानून नहीं लगता क्योंकि यह एक विशिष्ट कानून है, एक विशिष्ट वाचा है जिसे भगवान ने इज़राइल के साथ बनाया है। चिरस्थायी वाचा संभवतः उस व्यवस्था पर आधारित है जो नूह के दिनों में स्थापित की गई थी।

अध्याय 26 की आयत 19 में, उसी संदर्भ में, यशायाह कहता है कि भविष्य में, जब परमेश्वर उस न्याय को लाने की तैयारी करेगा, तो पृथ्वी अपने रक्तपात का खुलासा करेगी। तो, परमेश्वर विशेष रूप से राष्ट्रों का न्याय किस बात के लिए करने जा रहा है? नूह की वाचा के उनके उल्लंघन के लिए। यिर्मयाह 46 से 51 में, अक्सर उन विशिष्ट कारणों को नहीं बताया जाता है कि परमेश्वर इन विशेष राष्ट्रों का न्याय क्यों कर रहा है।

कभी-कभी, केवल न्याय का एक वाक्य होता है, लेकिन राष्ट्रों के विरुद्ध भविष्यवाणियों का अंतर्निहित धर्मशास्त्र, मेरा मानना है, यह है कि परमेश्वर इन राष्ट्रों को उनकी ज़िम्मेदारियों के लिए जवाबदेह ठहरा रहा है जो नूह की वाचा के तहत स्थापित की गई थीं। अमोस 1 से 2 में, जिसमें प्रभु न्याय में दहाड़ रहे हैं और वह सिथ्योन के शहर से एक शेर की तरह बाहर निकलते हैं, परमेश्वर के यहूदा और इस्राएल की ओर मुड़ने से पहले पहले छह न्याय की भविष्यवाणियाँ इस्राएल और यहूदा के आस-पास के राष्ट्रों के विरुद्ध हैं। उस अंश में, भविष्यवक्ता अमोस उन राष्ट्रों के विरुद्ध परमेश्वर द्वारा लाए जाने वाले न्याय के विशिष्ट कारणों को बताने जा रहा है।

कभी-कभी, यह इजरायल के खिलाफ उनके द्वारा की गई हिंसा और अत्याचारों के कारण होता है। हमारा पूरा सिद्धांत यह है कि यदि आप भगवान की आंख में अपनी उंगली डालते हैं, तो भगवान उस पर प्रतिक्रिया करेंगे। भगवान अपने लोगों के साथ दुर्व्यवहार और दुर्व्यवहार पर प्रतिक्रिया करते हैं।

लेकिन अन्य चीजों में से एक जो हम राष्ट्रों के खिलाफ उन निर्णय दैवज्ञों में देखते हैं, वह यह है कि उन्हें अक्सर उन अत्याचारों और हिंसा के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है जो उन्होंने इज़राइल के अलावा अन्य राष्ट्रों के खिलाफ किए थे। इसलिए, अमोस अध्याय 2, श्लोक 1 से 2 में कहता है, कि परमेश्वर एदोम के राजा की हड्डियों को जलाने के अपराध के लिए मोआब के राजा का न्याय करने जा रहा है। उस राजा के विरुद्ध न्याय, यहोवा का क्रोध, परमेश्वर की सजा का इस्राएल से कोई लेना-देना नहीं है।

इसका उस हिंसा से कुछ लेना-देना है जो अन्य लोगों के विरुद्ध की गई है। आप वहां नूह की वाचा के प्रति अंतर्निहित जवाबदेही देखते हैं। हबक्कूक अध्याय 2, पद 12 उस न्याय के बारे में बताता है जो परमेश्वर बेबीलोन के विरुद्ध लाने जा रहा है, और यह कहता है, बेबीलोन पर हाय।

और हाय, याद रखो, मौत की सज़ा, मौत आ रही है। बाबुल मृत समान है। क्यों? क्योंकि यह एक ऐसा शहर है जो खून-खराबे पर बना है।

नबी नहूम अध्याय 3 आयत 1 के अनुसार रक्तपात के कारण नीनवे नगर का यह भयानक न्याय होने वाला है। और इतिहास में अशूरियों के बारे में हम जो जानते हैं, उससे पता चलता है कि वे

अविश्वसनीय रूप से क्रूर, हिंसक लोग थे, यहां तक कि प्राचीन निकट पूर्व के मानकों के अनुसार भी। तो, प्रभु उन्हें इसके लिए जवाबदेह ठहराएंगे।

नहूम 3 में अगली दो आयतें उस सेना का चित्रण करती हैं जो नहूम में आने वाली है और उनके साथ वही व्यवहार करेगी जो उन्होंने अन्य लोगों के साथ किया है। यहां भविष्यसूचक न्याय है। तो, राष्ट्रों के विरुद्ध दैवज्ञों का अंतर्निहित धर्मशास्त्र यह है कि ये राष्ट्र भी उतने ही जिम्मेदार हैं, उतने ही ईश्वर के प्रति जवाबदेह हैं जितना इज़राइल है, लेकिन अलग-अलग वाचागत कारणों से।

ठीक है। तो यह इस सबका अंतर्निहित धर्मशास्त्र है। आइए ध्यान दें, इससे पहले कि हम इन भविष्यवाणियों के बारे में आगे की व्याख्या करें, आइए उन राष्ट्रों पर ध्यान दें जिनका विशेष रूप से इन न्याय भविष्यवाणियों में उल्लेख किया गया है जो यिर्मयाह की पुस्तक में पाए जाते हैं।

अध्याय 46, मिस्र राष्ट्र के विरुद्ध न्याय होने जा रहा है और प्रभु उन्हें नीचे गिराने जा रहा है। अध्याय 47, पलिश्टी, और वे इस्राएल और यहूदा के पड़ोसी थे, और वे न्यायियों के समय से ही शत्रु थे। अध्याय 48, मोआबी।

अध्याय 49, श्लोक 1 से 6, अम्मोनी लोग। अध्याय 49, श्लोक 7 से 22, एदोमी लोग। अध्याय 49, श्लोक 23 से 27, दमिश्क, अरामियों की राजधानी।

ऐसा कोई व्यक्ति जिसके साथ इस्राएल अपने पूरे इतिहास में संघर्ष या साझेदारी में लगा हुआ था। अध्याय 49, श्लोक 28 से 33 में, केदार और हाज़ोर की अरब जनजातियाँ, इस्राएल में हाज़ोर नहीं, बल्कि ऐसा प्रतीत होता है कि वह अरब में है। एलामाइट्स, अध्याय 49 श्लोक 34 से 39, फिर से, एक ऐसा राज्य जो मेसोपोटामिया या बेबीलोन के पूर्व में सैकड़ों मील दूर था।

और फिर अध्याय 50 और 51 में, अंतिम भविष्यवाणी बेबीलोन के विरुद्ध है। इस सूची के बारे में हम क्या देखते हैं? इस सूची के बारे में हम जो देखते हैं वह यह है कि यह एक महाशक्ति और किसी ऐसे व्यक्ति के साथ शुरू और समाप्त होती है जो एक साम्राज्य था। मिस्र, अध्याय 46, वह साम्राज्य नहीं है जो वह कभी था, लेकिन अतीत में इस्राएल का महान उत्पीड़क था और अभी भी यिर्मयाह के दिनों में राजनीतिक परिदृश्य में जो कुछ चल रहा है उसमें एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी है।

अंत में, बेबीलोन अध्याय 50 और 51. तो यह इन दो महाशक्तियों के संदर्भों द्वारा कोष्ठक में है। बीच में, आपके पास उन सभी राष्ट्रों के खिलाफ न्याय के भाषण हैं जो इज़राइल के आसपास हैं।

यह हमें याद दिलाता है कि कोई भी राष्ट्र इतना बड़ा नहीं है कि वह न्याय से बच न सके, लेकिन कोई भी राष्ट्र इतना छोटा भी नहीं है कि परमेश्वर उसे अनदेखा कर दे। तो यह राष्ट्रों की सूची है। जब आप यहजेकल की ओर मुड़ते हैं और आप उन राष्ट्रों को देखते हैं जिनका उल्लेख वहाँ किया गया है, जो राष्ट्र सूचीबद्ध हैं, अम्मोन, मोआब, एदोम, फिलिस्तिया, सोर, सीदोन और मिस्र।

और इसलिए, बस कुछ अंतरों के साथ, राष्ट्र मूलतः एक जैसे ही हैं। ठीक है, हम क्या जानते हैं और इन निर्णयों के बारे में हमें क्या समझ में आता है जब हम देखते हैं कि परमेश्वर इन विशिष्ट

लोगों के समूह का न्याय करने में क्या कर रहा है? ध्यान दें कि वे एक विशिष्ट भौगोलिक स्थान पर हैं। वे इज़राइल के आस-पास के तत्काल क्षेत्र में हैं।

और मुझे लगता है कि इन अंशों के बारे में समझना एक महत्वपूर्ण बात है। ये निर्णय हैं जो इन विभिन्न राष्ट्रों पर घोषित किए गए हैं। ये ऐसे निर्णय हैं जो मुख्य रूप से इतिहास में होते हैं।

ये वे न्यायदंड नहीं हैं जो मुझे लगता है कि हमारे लिए महान क्लेश या मसीह के दूसरे आगमन से पहले के अंतिम दिनों का वर्णन कर रहे हैं। ये वे न्यायदंड हैं जो यिर्मयाह के दिनों की स्थितियों में ऐतिहासिक परिस्थितियों में किए जा रहे हैं। वास्तव में, इनमें से अधिकांश न्यायदंड बेबीलोन की सेना द्वारा किए जाने वाले हैं।

ठीक है, मिस्र के विरुद्ध न्याय का संदेश। देखिए हमारे पास यहाँ क्या है। प्रभु का वचन, अध्याय 46, पद 1, जो मिस्र के आस-पास के राष्ट्रों के बारे में यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के पास आया, मिस्र के राजा फिरौन नको की सेना के बारे में, जो कर्कमीश में फरात नदी के पास थी, और जिसे बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर ने योशियाह के पुत्र यहोयाकीम के चौथे वर्ष में हराया था।

तो, यह न्याय कब होने वाला है? यह न्याय उस युद्ध से जुड़ा है जिसमें नबूकदनेस्सर और बेबीलोनियों ने 605 ईसा पूर्व में मिस्रियों को हराया था। यह वह युद्ध था जिसने बेबीलोन को प्राचीन निकट पूर्व में प्रमुख शक्ति के रूप में स्थापित किया। लेकिन यिर्मयाह की भविष्यवाणी में, यिर्मयाह ने उस युद्ध के परिणाम की घोषणा उसके होने से पहले ही कर दी थी।

देखो, मैं जानता हूँ कि यहाँ क्या होने वाला है। अध्याय 46, पद 13 में यह कहा गया है, वह वचन जो प्रभु ने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता से बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर के मिस्र देश पर आक्रमण करने के बारे में कहा था। ठीक है, अध्याय 46, पद 26, भविष्यद्वक्ता वहाँ कहता है, मैं उन्हें, मिस्रियों को, उन लोगों के हाथ में सौंप दूँगा जो उनके प्राण के खोजी हैं, बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर और उसके अधिकारियों के हाथ में।

तो, मिस्र के खिलाफ भविष्यवाणी की शुरुआत, बीच और अंत में, कौन है जो इस न्याय को अंजाम देता है? नबूकदनेस्सर। यह नहीं कहता कि, महान क्लेश के दिनों में, मैं उन्हें मसीह विरोधी के हाथों में सौंप दूँगा। या यहाँ क्या होने वाला है: यह एक ऐतिहासिक न्याय है जो सैकड़ों साल पहले हुआ था, यीशु के आने के समय से भी पहले।

ठीक है। हमारे पास केदार जनजाति, इस अरब समूह के खिलाफ अध्याय 49, श्लोक 30 में एक निर्णय भाषण है। और ध्यान दें कि इस निर्णय के संदर्भ में वहाँ क्या कहा गया है।

यह कब होने जा रहा है? यह न्याय कब लागू होने जा रहा है? श्लोक 30 में कहा गया है, क्योंकि बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर ने तुम्हारे विरुद्ध एक योजना बनाई है और तुम्हारे विरुद्ध एक उद्देश्य बनाया है। केदार का न्याय कैसे होने जा रहा है? क्या यह फिर से आर्मेगिडन की लड़ाई है या दूसरा आगमन? नहीं, यह यिर्मयाह के दिनों में किए गए न्याय हैं जो उस ऐतिहासिक स्थिति का हिस्सा थे। इसलिए, पुराने नियम की भविष्यवाणी के लोकप्रिय उपचारों में अक्सर जो कुछ होता है, वह यह है कि हम अक्सर पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के पास समकालीन घटनाओं या

यीशु के दूसरे आगमन से पहले अंतिम दिनों में दुनिया में क्या होने जा रहा है, इसके बारे में चीजों को तलाशने की कोशिश करते हैं।

और अक्सर हम विशिष्ट संदर्भों की तलाश में रहते हैं। क्या इस घटना का वादा किया गया था? क्या यह घटना शास्त्र में है? क्या यह हमें दिखा रहा है कि अंत निकट है? ये अंश अंत समय का वर्णन नहीं कर रहे हैं। वे उन चीजों का वर्णन कर रहे हैं जो वास्तव में इतिहास में घटित हुई हैं।

अब यहाँ ऐसे पैटर्न और समानताएँ हैं जो निश्चित रूप से अंतिम समय में किए जाने वाले न्याय में फिर से परिलक्षित होंगी। और हम इसके बारे में और बात करने जा रहे हैं। लेकिन इन अंशों में जाना और समकालीन राजनीतिक घटनाओं या भविष्य में होने वाली चीजों के लिए विशिष्ट संदर्भ खोजने की कोशिश करना वास्तव में एक दोषपूर्ण व्याख्या है।

और हम अक्सर भविष्यवाणी के लोकप्रिय उपचारों को ऐसा करते हुए देखते हैं। और अक्सर, यह एक किताब बेचने या कुछ वीडियो बनाने का एक अच्छा तरीका है जो लोकप्रिय होने जा रहे हैं या दर्शकों को प्राप्त करने जा रहे हैं, लेकिन यह वास्तव में एक वैध व्याख्या नहीं है। आपको ऐतिहासिक संदर्भ और अंश की सेटिंग को देखना होगा।

इस समय एक बहुत लोकप्रिय पुस्तक है जिसका नाम है द हर्बिगर जो यह दिखाने की कोशिश करती है कि अमेरिका के न्याय की भविष्यवाणी यशायाह 9 और 10 में की गई है। लेकिन जब मैं यशायाह 9 और 10 के संदर्भ को देखता हूँ, तो यह यशायाह के दिनों में, यीशु के समय से 800 साल पहले, इस्राएल और यहूदा के बारे में बात कर रहा है। यह 20वीं सदी या 21वीं सदी के अमेरिका के बारे में बात नहीं कर रहा है।

इसलिए, ये ऐसे न्याय नहीं हैं जो अंतिम दिनों में आएंगे। ये ऐसे न्याय हैं जो यिर्मयाह के दिनों में, उस समय की ऐतिहासिक सेटिंग में आ रहे हैं और किए जा रहे हैं। अब, अध्याय 46 में मिस्र के न्याय का वर्णन श्लोक 10, यिर्मयाह 46.10 में किया गया है, वह दिन, वह समय जब मिस्र का नाश होने वाला है, वह दिन सेनाओं के यहोवा परमेश्वर का दिन है, प्रतिशोध का दिन, जहाँ परमेश्वर अपने शत्रुओं से अपना बदला लेगा।

और फिर, जब हम प्रभु के दिन को सुनते हैं, तो हम फिर से अंत समय, हर-मगिदोन की लड़ाई, उस तरह के संदर्भ की ओर आकर्षित हो जाते हैं। परन्तु स्मरण रखो कि प्रभु का वह दिन भविष्यवक्ताओं में किस प्रकार प्रयोग किया गया है। भविष्यवक्ताओं में प्रभु का दिन किसी ऐसी चीज़ का उल्लेख कर सकता है जो या तो निकट है या दूर है।

और परमेश्वर ने इतिहास में इस्राएल और यहूदा, और यहां तक कि इन विदेशी राष्ट्रों के विरुद्ध जो व्यक्तिगत निर्णय दिए, वह यहोवा का दिन है। प्रभु का दिन वह है जब भगवान अपने शत्रुओं को हराने के लिए नीचे आते हैं। और बेबीलोन के आक्रमण में, वह यहूदा के लोगों के लिए यहोवा का दिन था।

जब नबूकदनेस्सर ने कर्केंमिश में मिस्र की सेना को हराया, तो यिर्मयाह का कहना है कि वह मिस्र के लिए प्रभु का दिन था। अब, कभी-कभी भविष्यवक्ताओं में, यह बताना वास्तव में कठिन

होता है कि वे कब प्रभु के उस दिन के बारे में बात कर रहे हैं जो निकट है और उस दिन के बारे में जो दूर है, लेकिन यहाँ केवल प्रभु के दिन को देखने का मतलब यह नहीं है कि यह एक युगांतिक मार्ग है। फिर, हम इतिहास में घटित निर्णयों के बारे में बात कर रहे हैं।

सपन्याह ने कहा था कि यहोवा का दिन निकट है। वह बेबीलोन पर आक्रमण के बारे में बात कर रहा है। इसलिए, मुझे लगता है कि इसे यहां स्थापित करना एक महत्वपूर्ण व्याख्यात्मक चीज़ है।

और मुझे उम्मीद है कि इससे हमें निराशा नहीं होगी। यह ऐसा था, वाह, मुझे उम्मीद थी कि हम यहाँ बाइबिल की भविष्यवाणी के बारे में कुछ नए रहस्य सीखेंगे। इस खंड में हमने जो अन्य महत्वपूर्ण बातें सीखीं, उनमें से एक यह है कि हमारे लिए यह सोचना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर इन विशेष राष्ट्रों का न्याय क्यों करने जा रहा है। और मुझे लगता है कि कुछ विचार सामने आते हैं।

और फिर, जैसा कि मैंने कई बार पढ़ा है, यिर्मयाह बस आने वाले न्याय की घोषणा करने जा रहा है, और वास्तव में इसका कोई स्पष्ट स्पष्टीकरण नहीं है। आपको लगभग उस इतिहास की समझ होनी चाहिए जो इस सब के पीछे छिपा हो सकता है। लेकिन एक बात जो मैं बार-बार देखता हूँ वह यह है कि परमेश्वर मुख्य रूप से इन राष्ट्रों का न्याय उनके अहंकार और उनके घमंड के लिए करने जा रहा है।

परमेश्वर ने इस संसार को इस तरह से बनाया है कि वह राजा के रूप में पहचाना जाए, जहाँ उसे सम्मान और महिमा मिले और उसे प्रभुत्व और सम्मान दिया जाए। हालाँकि, हम पूरे शास्त्र में यही पाते हैं कि मानवता उस राजत्व के विरुद्ध विद्रोह कर रही है। मानवता परमेश्वर को वह सम्मान देने से इनकार करती है जिसका वह हकदार है।

और कई बार, उन्होंने अपना खुद का प्रति-राज्य स्थापित कर लिया है, जहाँ वे उसे हटाकर अपना गौरव स्थापित करने की कोशिश कर रहे हैं। मनुष्य का अभिमान उसे इस हद तक ले जाता है कि वह अपने खुद के देवताओं को भी डिजाइन और तैयार कर लेता है। यही अभिमान है।

यह ईश्वर के बजाय मानव संसाधनों पर भरोसा करना है। तो हाँ, प्रभु इन राष्ट्रों के देवताओं का भी न्याय करने जा रहा है, लेकिन मुख्य रूप से, वह उनके अहंकार और गर्व के लिए उनका न्याय करने जा रहा है, जो वास्तव में उनकी मूर्तिपूजा का आधार और आधार है। तो, प्रभु मिस्रियों से कहने जा रहा है, और यहाँ मिस्रियों के गर्व का वर्णन है, जो इस तरह हैं, नील नदी की तरह बढ़ते हुए, नदियों की तरह जिनका पानी उफान पर है।

मिस्र नील नदी की तरह ऊपर उठता है, नदियों की तरह जिसका पानी उफान पर है। और उसने कहा है, मैं ऊपर उठूंगा, और पृथ्वी को ढक लूंगा, और शहरों और उनके निवासियों को नष्ट कर दूंगा। यह यहाँ वास्तव में एक प्रभावशाली छवि है।

मिस्र खुद को नील नदी की तरह समझता है जो हर साल अपने किनारों पर बाढ़ लाती है। और मिस्र कहता है, अपनी ताकत और अपनी सेनाओं के साथ, मैं पूरी धरती पर बहूंगा। मैं उन पर हावी हो जाऊंगा।

प्रभु कहते हैं कि तुम अपनी सेनाओं की सीमाओं और अपनी ताकत की सीमाओं का पता लगाने जा रहे हो क्योंकि परमेश्वर तुम्हारे घमंड का न्याय करने जा रहा है। अध्याय 48, श्लोक 7 में मोआबियों के विरुद्ध। और जैसा कि हम आज के राष्ट्रों के बारे में सोचते हैं, यदि परमेश्वर इन प्राचीन राष्ट्रों का उनके अहंकार और उनके घमंड के आधार पर न्याय कर रहा है, तो आज हमें जो जवाबदेही मिलती है, उसके बारे में सोचें। लेकिन परमेश्वर मोआब के बारे में कहता है, क्योंकि तुमने अपने कामों और अपने खज़ानों पर भरोसा किया है, इसलिए तुम भी पकड़े जाओगे, और तुम्हारा परमेश्वर कमोश भी अपने पुजारी और अपने अधिकारियों के साथ बंधुआ बन जाएगा।

तो, क्या आज हमारे लिए इस बात की कोई प्रासंगिकता है कि एक राष्ट्र अपने धन और अपने खजाने पर गर्व के कारण भगवान के न्याय के अधीन आ रहा है? और जरा विचार करें, पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं में ऐसा कुछ भी नहीं है जो आज हमारे लिए प्रासंगिक हो, है ना? कोई राष्ट्र कभी नहीं... अब, यही कारण है कि यह सब वास्तव में मायने रखता है। जिस तरह से भगवान ने मिस्र के गौरव और उसकी शाही शक्ति का न्याय किया, उसी तरह, भगवान ने मोआब जैसे छोटे राष्ट्र का भी न्याय किया जिस पर हम शायद ध्यान भी नहीं देंगे, भगवान उनके गर्व को भी नजरअंदाज नहीं करते हैं और उनके अहंकार ने उन्हें अपने स्वयं के देवताओं को ईजाद करने और अपने स्वयं के संसाधनों पर भरोसा करने के लिए प्रेरित किया है। यहोवा मोआब के विषय में कहता है, अध्याय 48, पद 26, मोआब पर आनेवाले न्याय के विषय में कहकर उसे मतवाला कर, क्योंकि उस ने यहोवा के विरुद्ध अपने आप को बड़ा किया है, यहां तक कि मोआब उसकी उल्टी में लोटपोट हो जाएगा, और वह भी कैद में रखा जाएगा। उपहास।

तो, आप अपने आप को प्रभु के विरुद्ध बड़ा करने जा रहे हैं। आप स्वयं का गुणगान करने जा रहे हैं। आप अपना और अपने गौरव और अपनी उपलब्धियों का महिमामंडन करने जा रहे हैं।

जब आप इस विनाशकारी न्याय का अनुभव करेंगे जो वह आपके विरुद्ध लाने जा रहा है, तो प्रभु आपको अपनी उल्टी में लोट-पोट करके आपको अपमानित करेगा। तो, इन शत्रुओं के बारे में बार-बार कही जाने वाली बात यह है कि प्रभु उनके घमंड के लिए उनका न्याय करने जा रहे हैं। अन्य चीज़ों में से एक जो इन राष्ट्रों पर निर्णय लाएगी, वह है इज़राइल के लोगों के साथ उनका दुर्व्यवहार।

हम बस मोआबियों को देख रहे थे। इज़राइल के प्रति उनके दुर्व्यवहार के लिए उन पर न्याय किया जाएगा। अध्याय 48, श्लोक 27 में यह कहा गया है, क्या इस्राएल तुम्हारे लिये उपहास का पात्र नहीं था? क्या वह चोरों में पाया जाता था कि तुम उसके बारे में जो कुछ भी कहते, सिर हिला देते।

तुमने इस्राएल का उस समय मज़ाक उड़ाया जब वे राष्ट्रीय संकट से गुज़र रहे थे। प्रभु तुम्हारे विरुद्ध भी यही करने जा रहा है। निकट भविष्य में स्थिति बदलने वाली है।

फिर, अम्मोनी लोग, इस्राएल के पूर्व में जॉर्डन के पार के पड़ोसी थे। अम्मोनियों के बारे में, यहोवा कहता है, क्या इस्राएल के कोई पुत्र नहीं है? क्या उसका कोई वारिस नहीं है? इस्राएल की भूमि के बारे में क्या? यहाँ मुद्दा यह है। फिर, मिलकॉम, जो अम्मोनियों का देवता था, उसने गाद को क्यों बेदखल कर दिया? क्या इस्राएल के लोगों के पास अपनी भूमि को आगे बढ़ाने के लिए वंशज नहीं थे? क्या इसीलिए तुमने और तुम्हारे देवताओं ने इस्राएल की भूमि पर आक्रमण किया और गाद के गोत्र के क्षेत्र को छीन लिया? तुमने अपने लोगों को उसके शहरों में बसाया।

उन्होंने इस्राएल के उत्तरी राज्य से भूभाग चुरा लिया था। यह यिर्मयाह के समय से पहले अशशूर संकट तक चला गया। यहाँ प्रभु क्या कहते हैं। इसलिए, देखो, ऐसे दिन आ रहे हैं, प्रभु की घोषणा है, जब मैं युद्ध की पुकार सुनाऊँगा।

अम्मोनियों का विनाश होने वाला है। इस भाग में न्याय किए जाने वाले लोगों में से एक एदोमी लोग हैं। फिर से, वे एसाव के वंशज हैं।

वे अपने पूरे इतिहास में इस्राएल के प्रतिद्वंद्वी रहे हैं। यिर्मयाह वास्तव में एदोम के न्याय के कारणों के बारे में बात नहीं करता है, लेकिन जब आप ओबद्याह की पुस्तक पढ़ते हैं, तो भविष्यवक्ता ओबद्याह द्वारा बताई गई बातों में से एक यह है कि एदोमियों ने वास्तव में बेबीलोनियों के साथ सेना में शामिल हो गए थे जब वे यहूदा की भूमि पर आक्रमण कर रहे थे। उनके सैनिक भाड़े के सैनिक थे जो यरूशलेम पर आक्रमण करने वाले बेबीलोनियों के साथ यहूदा के खिलाफ लड़े थे।

दक्षिण में एदोम ने बेबीलोन के आक्रमण का उपयोग यहूदा से क्षेत्र छीनने के अवसर के रूप में किया था, और इसीलिए उनके विरुद्ध न्याय का यह क्रोधित संदेश है। जो कोई भी परमेश्वर के लोगों को छूता है, वह वास्तव में परमेश्वर की आँख के तारे को छूता है। इसलिए, परमेश्वर उनके विरुद्ध न्याय करने जा रहा है।

तो, स्थायी धार्मिक सिद्धांत या स्थायी संदेश के संदर्भ में जो इससे निकलता है, हाँ, यह उन लोगों के समूह के खिलाफ़ एक निर्णय है जो बहुत समय पहले उन देशों और राष्ट्रों में रहते थे, जिन्हें अगर हम अपनी बाइबिल की एटलस से निकालें, तो हममें से कुछ लोगों को उन्हें खोजने में मुश्किल हो सकती है। लेकिन इससे जो स्थायी धार्मिक सिद्धांत उभरता है वह यह है कि ईश्वर अंततः हर तरह के मानवीय अभिमान का न्याय करने जा रहा है। और व्यक्तिगत स्तर पर, एक व्यक्ति का अभिमान जो कहता है, मैं ईश्वर से स्वतंत्र होकर जी सकता हूँ।

मुझे उसकी ज़रूरत नहीं है। इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि वे नास्तिक हैं या आस्तिक। अगर आप यह दिखावा करते हुए जीते हैं कि आपको ईश्वर की ज़रूरत नहीं है, तो व्यावहारिक रूप से आप नास्तिक हैं।

और इस तरह का घमंड आपको परमेश्वर के न्याय के अधीन ले आएगा। लेकिन जो राष्ट्र अपनी संपत्ति या अपनी उपलब्धियों, अपने इतिहास, अपनी विरासत या अपनी सैन्य उपलब्धियों के

कारण घमंड में चूर हो गए हैं, परमेश्वर अंततः उन सभी को नीचे गिरा देगा। और परमेश्वर राष्ट्रों और व्यक्तियों दोनों पर जो अंतिम न्याय करेगा, वह ऐसा न्याय होगा जो सभी प्रकार के मानवीय घमंड को समाप्त कर देगा।

ठीक है। अब याद रखें कि यिर्मयाह 46 से 51 में वर्णित प्रभु का दिन प्रभु का दिन है जिसे परमेश्वर ने विशिष्ट राष्ट्रों के लिए तैयार किया है। यशायाह अध्याय दो, मुझे लगता है कि प्रभु के दिन के बारे में अधिक बात कर रहा है जहाँ परमेश्वर पूरी पृथ्वी के खिलाफ न्याय करने जा रहा है।

और यहाँ बताया गया है कि वह निर्णय किस बारे में होगा। यशायाह 2:11 कहता है कि मनुष्य का घमंड नीचा किया जाएगा, और मनुष्यों का घमण्ड नीचा किया जाएगा, और उस दिन केवल प्रभु ही ऊंचा किया जाएगा। क्योंकि सेनाओं के यहोवा के लिये उन सभी के विरुद्ध जो घमण्डी और ऊंचे हैं, और जो सब अहंकारी हैं, एक दिन आता है, और वह गिरा दिया जाएगा।

और इसलिए, इसके अंत में, यह कहता है, उस आदमी के बारे में रुकें जिसके नासिका में सांस है, वह किस हिसाब से है? तो, यह संदेश कि हम इसे देखना शुरू करते हैं और कहते हैं, ये दैवज्ञ, इनका हमसे क्या लेना-देना है? वे उन राष्ट्रों के बारे में हैं जो बहुत समय पहले रहते थे। हमें इसकी परवाह क्यों करनी चाहिए? वही अहंकार जिसके कारण परमेश्वर ने उनके विरुद्ध न्याय किया, अंततः यही कारण है कि परमेश्वर भविष्य में सभी राष्ट्रों का न्याय करेगा। और यही कारण है कि परमेश्वर आज भी राष्ट्रों का न्याय करने की प्रक्रिया में उसी तरह से सक्रिय है जैसे उसने यिर्मयाह के दिनों में किया था।

भगवान सभी तरह के मानवीय अभिमान को खत्म करने जा रहे हैं। और इसलिए, मुझे इसे देखना होगा और कहना होगा, वाह, शायद इन अंशों में कुछ ऐसी बातें हैं जो प्रासंगिक हैं। भले ही ये ऐसे निर्णय हों जो बहुत समय पहले लोगों के खिलाफ किए गए थे, शायद ये निर्णय हमारे लिए प्रासंगिक हैं क्योंकि भगवान मानवीय अभिमान से नफरत करते हैं।

और परमेश्वर अंततः अपनी धार्मिकता और न्याय में, उन राष्ट्रों को गिरा देता है जो घमंड में चूर हैं और परमेश्वर के सामने अपनी मुट्ठी हिलाते हैं। और मुझे लगता है कि हम अपने देश में इस तरह का घमंड देखते हैं। और फिर से, बिली ग्राहम के उस उद्धरण पर वापस आते हुए, अगर परमेश्वर अमेरिका का न्याय नहीं करता है, तो उसे सदोम और अमोरा से और यिर्मयाह के प्रकाश में एदोम और मोआब और पलिशतियों और मिस्रियों और बेबीलोन से माफ़ी मांगनी होगी, क्योंकि हम भी उसी तरह के घमंड से चूर हैं।

अब, हम पहले ही इस तथ्य का उल्लेख कर चुके हैं कि भविष्यवाणी के लोकप्रिय उपचारों में, हम अक्सर समकालीन घटनाओं के संदर्भ खोजने की कोशिश करते हैं। एक सवाल जो लोग मुझसे अक्सर भविष्यवक्ताओं के बारे में पूछते हैं, वह यह है कि क्या बाइबिल की भविष्यवाणी में संयुक्त राज्य अमेरिका का उल्लेख है। क्या आपको कोई छंद मिल सकता है? क्या इराक और अफ़गानिस्तान में युद्ध के बारे में कुछ है? क्या 9-11 की भविष्यवाणी बाइबिल के भविष्यवक्ताओं ने की थी? क्या आप जानते हैं कि मसीह विरोधी कौन है? क्या आप हमें दूसरे आगमन की तारीख बता सकते हैं? और जब मैं सवालों का जवाब देता हूँ, तो नहीं, मुझे उनमें से कोई भी सवाल नहीं

पता। वे इस तरह हैं, और आप भविष्यवक्ताओं को सिखाते हैं? आपको भविष्यवाणी पर वापस जाने और कुछ चीजें सीखने की ज़रूरत है।

मैंने भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों में बहुत खोजबीन की है। मुझे बाइबिल की भविष्यवाणी में संयुक्त राज्य अमेरिका का कोई संदर्भ नहीं दिखता, यहाँ तक कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में भी सर्वनाश की कल्पना में।

ठीक है। एक बहुत ही सरल व्याख्यात्मक नियम है जिसे हमें याद रखना चाहिए। पूरी बाइबल हमारे लिए है, लेकिन पूरी बाइबल हमारे बारे में नहीं है।

और इसलिए, ये संदेश हमारे लिए हैं। ये संदेश हमें सिखाते हैं और हमें निर्देश देते हैं, लेकिन ये हमारे बारे में नहीं हैं। ये उन राष्ट्रों के बारे में हैं जो बहुत समय पहले रहते थे, लेकिन ये हमें क्या सिखाते हैं।

परमेश्वर ने जो न्यायदंड तब दिए, वे उन न्यायदंडों का पूर्ववलोकन मात्र हैं जिन्हें परमेश्वर पूरे इतिहास में लागू करता रहेगा और जिन्हें परमेश्वर अंततः इतिहास के अंत में सभी लोगों के विरुद्ध लाएगा। एक और गलती जो हम अक्सर बाइबल की भविष्यवाणी के साथ करते हैं, वह है इज़राइल के बारे में कही गई बातों या वादों को अपने देश पर लागू करना। हम एक ईसाई राष्ट्र हैं।

हमारे यहाँ बहुत सारे ईसाई और बहुत सारे चर्च हैं। इसलिए, हम ईश्वर के चुने हुए लोग हैं। हम एक पवित्र राष्ट्र हैं।

मुझे लगता है कि जैसे-जैसे हमारे दिन में चीजें आगे बढ़ती रहती हैं, हमें एहसास होता है कि हम उससे कितने दूर हैं। लेकिन मुझे लगता है कि हम समझते हैं कि हम भगवान के चुने हुए लोग नहीं हैं। ईश्वर आज किसी भी राष्ट्र के माध्यम से उस तरह से कार्य नहीं कर रहा है जिस तरह वह प्राचीन इज़राइल के माध्यम से पुरानी अर्थव्यवस्था में करता था, यहाँ तक कि इज़राइल के आधुनिक राज्य में भी नहीं।

परमेश्वर के लोग अब एक राष्ट्रीय इकाई नहीं हैं। वे वह चर्च हैं जो हर जनजाति और राष्ट्र के लोगों से बना है। इसलिए, एक और गलती जो हम अक्सर करते हैं वह है इज़राइल को दी गई भविष्यवाणियों को लेना और उन्हें संयुक्त राज्य अमेरिका पर लागू करना।

परमेश्वर ने 2 इतिहास में इस्राएल को एक वचन दिया है, कि यदि मेरी प्रजा के लोग, जो मेरे कहलाते हैं, दीन होकर मुझे पुकारें, और अपना पाप मान लें, और मेरी ओर फिरे, तो मैं उनके देश को ज्यों का त्यों कर दूंगा। आज उस अनुच्छेद का प्राथमिक अनुप्रयोग संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए नहीं है, यह भगवान के लोगों, चर्च के लिए है। और यदि वे अपने आप को दीन करेंगे, तो परमेश्वर उन्हें आशीष देगा।

लेकिन इस बात की कोई गारंटी नहीं है, यहाँ तक कि अमेरिका में रहने वाले ईसाइयों के लिए भी, कि भगवान हमारी भूमि को ठीक करने जा रहे हैं। तो, हम बाइबिल की भविष्यवाणी में संयुक्त

राज्य अमेरिका को कहाँ पाते हैं? यह विशिष्ट अंशों में नहीं है, और यह इज़राइल को दिए गए विशिष्ट वादों या संदेशों में नहीं है। मुझे लगता है कि अगर हम संयुक्त राज्य अमेरिका को सामान्य तरीके से खोजना चाहते हैं, तो हमें राष्ट्रों के खिलाफ भविष्यवाणियों के पास जाना चाहिए।

और खास तौर पर मिस्र, बेबीलोन और असीरिया जैसे शक्तिशाली और महान साम्राज्य। और जिस तरह से हमारे राष्ट्र ने परमेश्वर की अवहेलना की है या परमेश्वर के खिलाफ अपने अभिमान और विद्रोह का प्रदर्शन किया है, उसी तरह से, जिस तरह से परमेश्वर ने उन राष्ट्रों का न्याय किया और उन्हीं कारणों से परमेश्वर ने उनका न्याय किया, परमेश्वर हमारा भी न्याय करेगा। जूली वुड्स नामक एक लेखिका ने कई साल पहले असीरिया को पश्चिम कहे जाने वाले छोटे भविष्यवक्ताओं के बारे में एक दिलचस्प लेख लिखा था।

और नहूम के निर्णय भाषणों के बारे में सोच रहे हैं और वे पश्चिमी दुनिया में और अमेरिका जैसे शाही राष्ट्र पर कैसे लागू होते हैं। और इसका मतलब यह नहीं है कि हम बस असीरिया और अमेरिका के बीच एक समीकरण बनाते हैं, और हम बुरे हैं, और हमें अपनी सेनाओं और सभी से छुटकारा पाने की जरूरत है। वह बात नहीं है।

लेकिन जब हम उन कारणों को देखते हैं कि क्यों भगवान ने अतीत में उन राष्ट्रों के खिलाफ फैसला सुनाया है, तो हमें याद दिलाया जाता है कि भविष्य में किसी समय भगवान हमारे राष्ट्र के साथ भी ऐसा ही करेंगे। यह अपरिहार्य है। और यदि भविष्य में कोई महान जागृति नहीं होती है, तो वह निर्णय निकट आ सकता है।

हम उस तरह के समाज में रह रहे हैं। लेकिन वही कारण हैं जिनके कारण परमेश्वर ने उन लोगों का न्याय किया, यही कारण है कि परमेश्वर ने पूरे इतिहास में राष्ट्रों का न्याय किया है और क्यों परमेश्वर अंततः हमारा न्याय करेगा। इसलिए, मैं नहूम की किताब पर जाकर यह नहीं कहता कि अमेरिका असीरिया के बराबर है।

लेकिन मैं वहां जाता हूँ और कहता हूँ, कई कारणों से भगवान ने अतीत में इन घमंडी और विद्रोही साम्राज्यों का न्याय किया, भगवान भविष्य में हमारा न्याय करने जा रहे हैं। और अगर हम संयुक्त राज्य अमेरिका का ईमानदारी से मूल्यांकन करें, तो हम यह नहीं कह सकते कि संयुक्त राज्य अमेरिका सीरिया के बराबर है या संयुक्त राज्य अमेरिका बेबीलोन के बराबर है। लेकिन जैसा कि पीटर लीथर्ट ने अपनी किताब में कहा है, हम शायद बेबेल और बीस्ट के बीच कहीं हैं।

हम उत्पत्ति अध्याय 11 में परमेश्वर की अवहेलना करने वाले शहर और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अंत में परमेश्वर के लोगों पर युद्ध की घोषणा करने वाले जानवर के बीच कहीं हैं। हम कहीं बीच में हैं। और इस वजह से, परमेश्वर का न्याय अंततः हम पर पड़ेगा।

जिन राष्ट्रों का न्याय किया गया, वे भविष्य में राष्ट्रों के लिए परमेश्वर के न्याय का प्रतिरूप बन गए। इन राष्ट्रों में से एक जिसका बार-बार उल्लेख होता है, वह है एदोम राष्ट्र, इस्राएल का पड़ोसी, एसाव का वंशज। जब मैं यशायाह की पुस्तक में भविष्यसूचक पाठ पढ़ता हूँ जो परमेश्वर के राज्य

या अंतिम दिनों के बारे में बात कर रहे हैं, तो परमेश्वर के शत्रुओं का न्याय अक्सर उस छोटे से राष्ट्र पर केंद्रित होता है।

यशायाह 34, परमेश्वर एदोम का न्याय करने जा रहा है, और फिर राज्य आता है। परमेश्वर एदोम का न्याय करने जा रहा है, यहजेकेल अध्याय 35, और फिर इस्राएल की पुनर्स्थापना आती है। यशायाह अध्याय 63, प्रभु एक योद्धा है जो युद्ध से वापस आ रहा है, बोझा से आ रहा है, जो एदोम की भूमि में है।

अब, इसका मतलब यह नहीं है कि जहां प्राचीन एदोमवासी रहते थे वहां रहने वाले लोगों पर भगवान की नजर है। लेकिन इसका मतलब यह है कि एदोम, ईश्वर और ईश्वर के लोगों के दुश्मन के रूप में, उन राष्ट्रों का एक आदर्श है जिनका भविष्य में न्याय किया जाएगा। पुराने नियम के भविष्यवक्ता हमें व्यक्तिगत रूप से हमारे लिए और अंततः राष्ट्रों के लिए भी ईश्वरीय न्याय की वास्तविकता की याद दिलाते हैं।

गृह युद्ध के दिनों में, अब्राहम लिंकन ने इस बारे में बात करते हुए कि वह क्यों मानते थे कि युद्ध हुआ था, आंशिक रूप से कहा था कि उनका मानना था कि दैवीय न्याय और दैवीय प्रतिशोध उसी का हिस्सा थे। उन्होंने कहा कि कोड़े से निकले खून की हर बूंद की कीमत तलवार से निकाले गए खून की हर बूंद से चुकाई जाएगी। स्टीफ़न कीलर नाम के एक इतिहासकार ने अपनी पुस्तक गॉड्स जजमेंट में, जो इस बारे में बात करने का उत्कृष्ट काम करता है, कहा है, हम एक समाज के रूप में एक ऐसी जगह पर आ गए हैं जहाँ हम अब उस पर विश्वास नहीं करते हैं।

या तो हमारी धर्मनिरपेक्षता या हमारी तकनीक के कारण, जिसे ईश्वर ने हाशिए पर धकेल दिया है, हमारी अलग-अलग राजनीतिक विचारधाराओं के कारण, या हमारे विचार के कारण कि ईश्वर न्याय नहीं कर सकता, हमने यह विचार खो दिया है कि ईश्वर न्याय कर सकता है और ईश्वर राष्ट्रों का न्याय करता है। पुराने नियम के भविष्यवक्ता अपनी वाणी में हमें इस तथ्य पर वापस ले जाते हैं कि यदि ईश्वर ने नूह की वाचा के उल्लंघन के लिए राष्ट्रों का न्याय किया, तो ईश्वर हमारा भी न्याय करेगा। जब हम दूसरे लोगों से ज़मीन चुराते हैं, तो हमने उसके लिए परमेश्वर के न्याय का अनुभव किया है।

जब हम हर दशक में लाखों की संख्या में अजन्मे बच्चों की हत्या करते हैं, तो ईश्वर हमें जिम्मेदार ठहराता है। नूह की वाचा का यह विचार ऐसा प्रतीत होता है कि रक्त का मीटर चल रहा है, लेकिन भगवान, व्यक्तिगत राष्ट्रों और समग्र रूप से दुनिया दोनों के साथ, अंततः पर्याप्त है, और निर्णय गिर जाता है। तो, इसे बंद करने के लिए, हाँ, हम एक ऐसे अनुभाग को देख रहे हैं जो इतिहास में हुए निर्णयों से संबंधित है, लेकिन वे हम दोनों व्यक्तियों और विभिन्न राष्ट्रों के लोगों के लिए एक अनुस्मारक हैं कि अंततः भगवान का न्याय राष्ट्रों पर भी आएगा।

ईश्वर का निर्णय एक वास्तविकता है, और भले ही हम इसे अनदेखा करें या दिखावा करें कि इसका अस्तित्व नहीं है, यह वास्तविक है, और यह कुछ ऐसा है जो भविष्यवक्ता हमें याद दिलाते हैं कि हमें निश्चित रूप से इसका हिसाब रखना होगा और इसका सामना करना होगा। अमोस ने

कहा, व्यक्तिगत और राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर अपने ईश्वर से मिलने के लिए तैयार रहें; जिस संस्कृति में हम रहते हैं उसमें हमें इसके बारे में अधिक जागरूक होने की आवश्यकता है।

यह यिर्मयाह की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. गैरी येट्स हैं। यह सत्र 29, यिर्मयाह 46-49, राष्ट्रों के विरुद्ध भविष्यवाणी है।